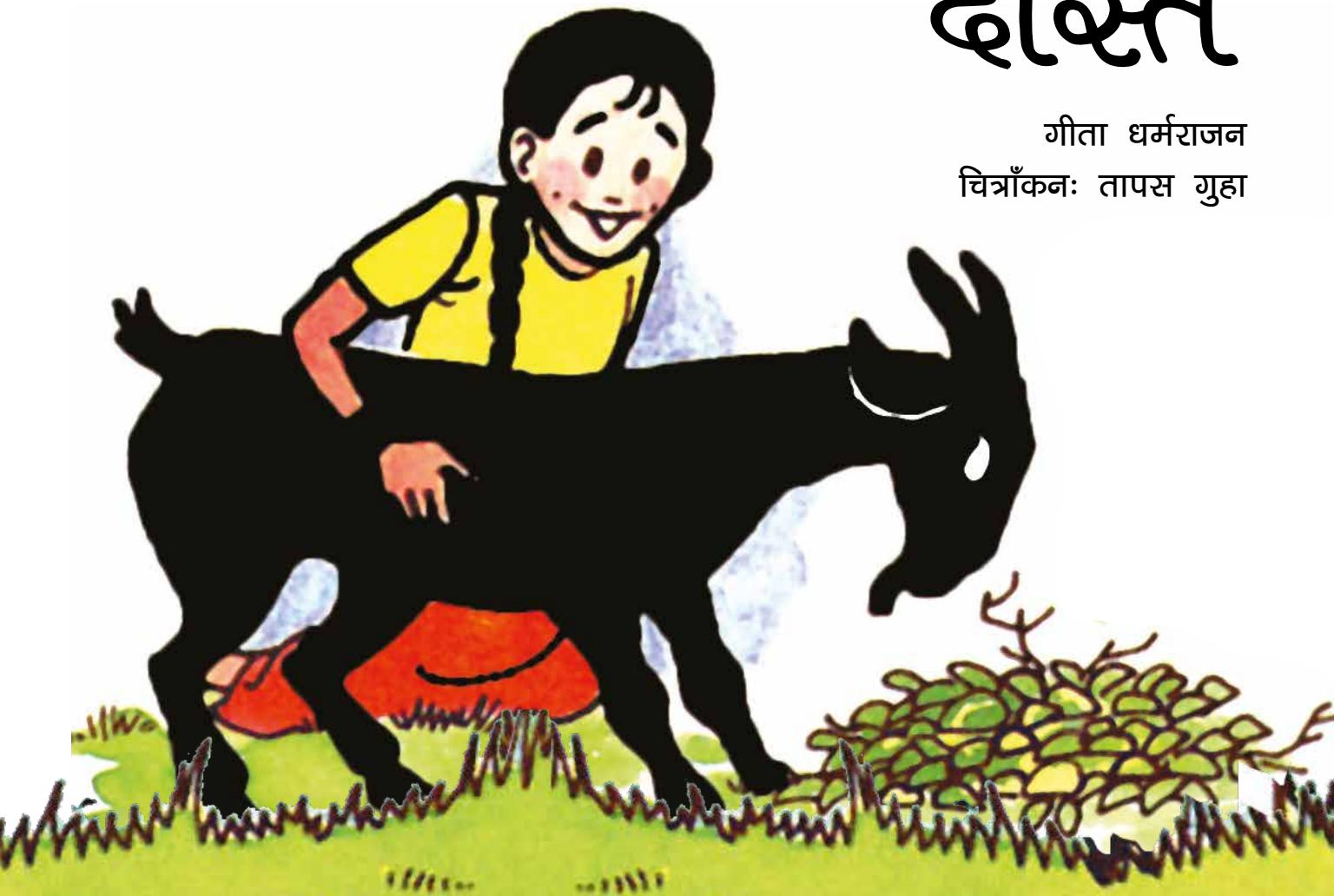




हसीना की दौकान

गीता धर्मराजन

चित्रांकन: तापस गुहा

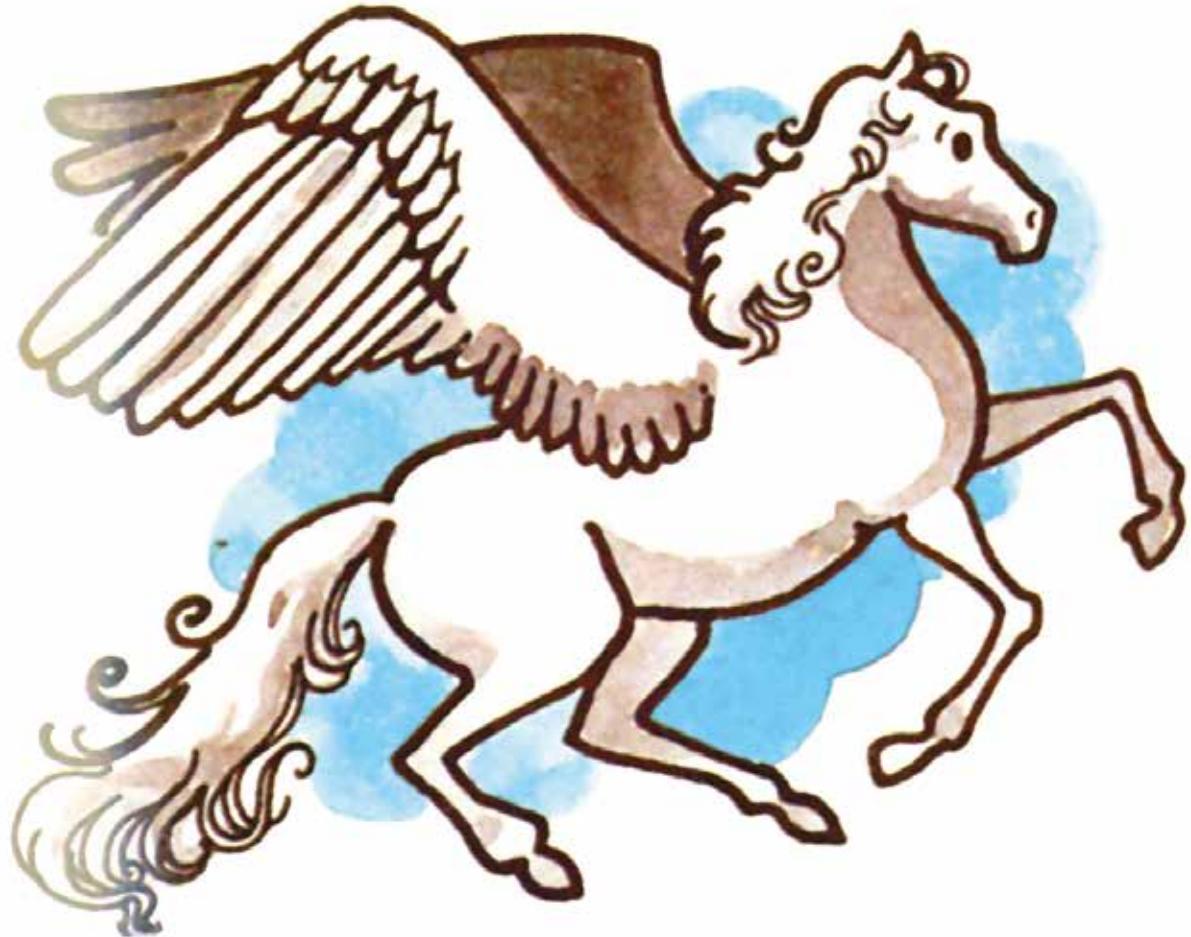




मेरा नाम
है गिना
।



मैं बकरी चराती हूँ।



आहा पक्षीराज! आओ मेरे दोस्त ...

आसमान में उड़ जाएँ





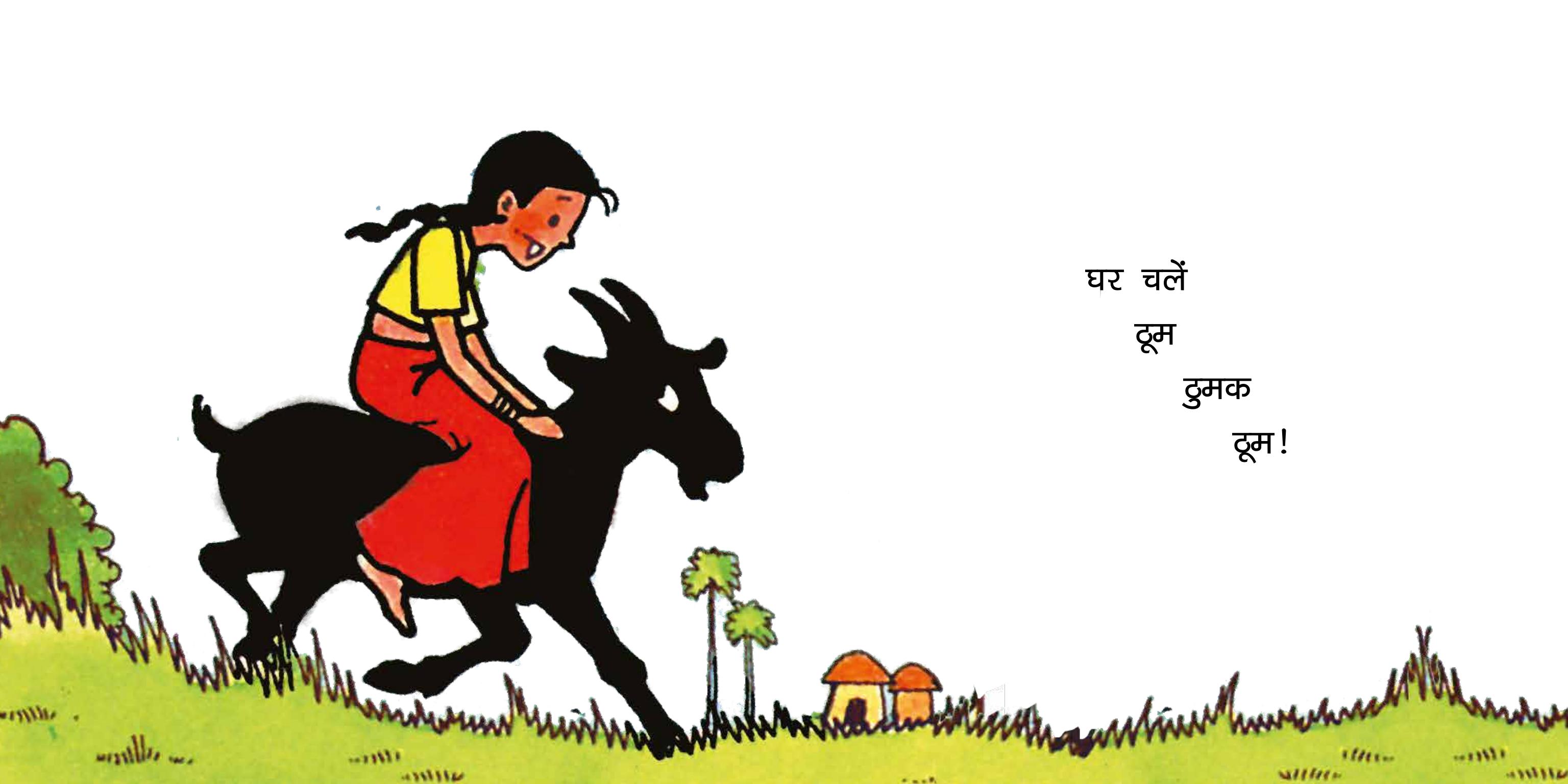
दोनों बादलों के साथ खेलते हैं,
हवा से रेस लगाते हैं।

और दोनों ही बड़ी चील का पीछा
भी करते हैं!





पक्षीराज कल फिर आना!



घर चलें

दूम

दुमक

दूम !





हमारे माँ और पापा किसान हैं।
हम बकरियां पालते हैं।

हम अपनी बकरियों से प्यार करते हैं।

बकरियों की देखभाल करना आसान है।
वे हमें स्वादिष्ट दूध देती हैं।
माँ कहती हैं, “हम गरीब नहीं हैं
क्योंकि हमारे पास बकरी है।”



गीता धर्मराजन को बच्चों के लिए कहानियां लिखना पसंद है। वह बच्चों की पत्रिका टारगेट की सम्पादक थी। वह पेनसिलवेनिया विश्वविद्यालय की पत्रिका – पेनसिलवेनिया गैजेट की भी संपादक थी। उन्हें 2012 में शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। तापस गुहा एक स्व-शिक्षित कलाकार हैं, और उनकी रचनाएँ कई बच्चों की किताबों, अखबारों और पत्रिकाओं में छपी हैं।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर-लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

“भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!”

— नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ
“कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।”

— पेपरटाइगर्स
“कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।”

— टाइम आउट
“कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।”

— चार्ल्स लैंड्री, द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग



पहला हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्र © कथा, 1990, 2021

लेखन कृति स्वामित्र © गीता धर्मराजन

चित्रांकन कृति स्वामित्र © कथा

स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुस्तक प्रयोग किति के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित नहीं।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्य: हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य हैं बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए-3 सर्वदय एन्क्लेव, श्री ओरोविन्दो मार्ग, नवी दिल्ली – 110017

दूसरांश: 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998

ई-मेल: marketing@katha.org

वेबसाइट: www-katha.org | www-books-katha.org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।

कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।



'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है।

यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ाता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ करती हैं। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha.org पर जाएँ।

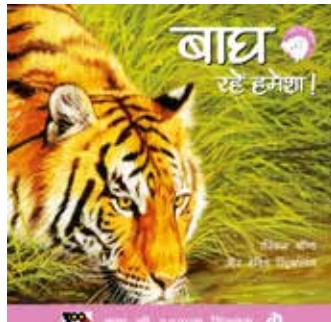
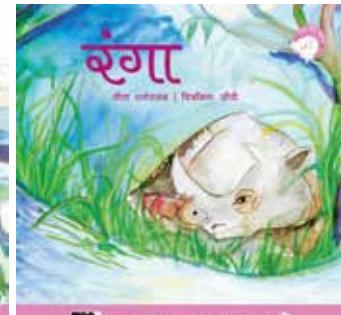
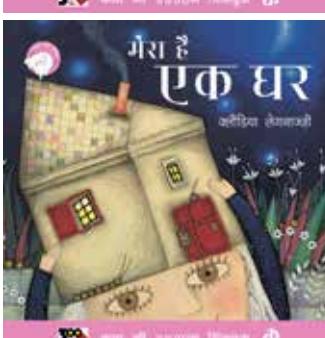
आनंद और समझने के लिए पढ़ो

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं



कथा की 300 उम्र विकासक

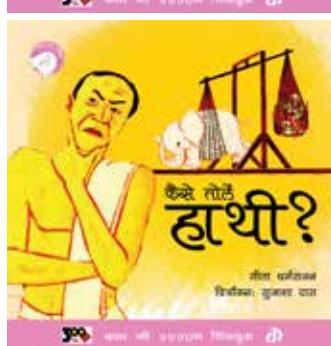
पिता: जय



FOR OUR BOOKS

“An institution
in the world of
Indian literature.”

— The Business
Standard



www.books.katha.org

for children



a katha book

ISBN-978-93-88284-81-3
9 789388 284813

www.katha.org

₹ xxx

कथा
प्राप्ति

प्राप्ति

प्राप्ति

प्राप्ति